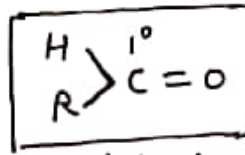


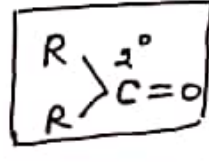
# Chap 12 Aldehyde Ketone & Carboxylic Acid

# Carbonyl :  $>C=O$  कार्बन तथा ऑक्सीजन के मध्य द्विवंध युक्त समूह

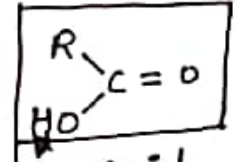
# Carbonyl व्युत्पन्न :



Aldehyde



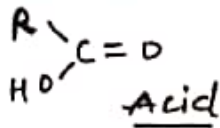
Ketone



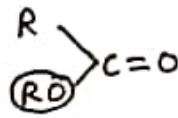
Acid

(At End of the chain) (At center of chain) (Oxygen at  $2^{\circ}C$ )  
(Oxygen at  $1^{\circ}C$ )

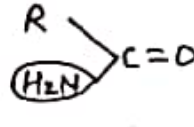
# Acid व्युत्पन्न :



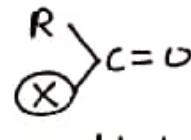
Acid



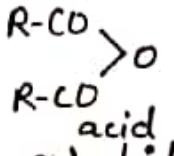
Ester



Amide



Acid halide



anhydride

Note: acid, acidhalide, acidamide, ester इन सभी में lp तथा  $\pi$  lp संयुग्मित होकर अनुनाद में भाग लेते हैं। अतः इनमें carbonyl समूह होते हुए भी, carbonyl प्रतिक्रिया के अभिलक्षण ( $S_N$  अभि) नहीं दर्शाते हैं।

# Carbonyl in Nature  $\Rightarrow$  सुगंध व स्वाद के लिए प्रसिद्ध

Ex: वनेलिन (वनीला सेम से प्राप्त)  $HO-C_6H_4-OCH_3-CHO$

सैलिसिलिक एसिड (मजे स्वीट से प्राप्त)  $HO-C_6H_4-CHO$

सिनैमोल्ड एसिड (वाल्चीनी से प्राप्त)  $C_6H_5-CH=CH-CHO$

# Aldehyde & Ketone : Introduction

सामान्य सूत्र :  $C_nH_{2n}O$

द्विघात्मक समूह : carbonyl  $>C=O$  Aldehyde  $-CHO$

प्रथम सदस्य :  $1^{\circ}C$  Aldehyde :  $H-CHO$  Ketone  $R-CO-R'$

$3^{\circ}C$  ketone :  $CH_3-CO-CH_3$

प्रकार : सामान्य / सरल कीटोन ( $R=R'$ )  $CH_3-CO-CH_3$

मिश्रित कीटोन ( $R \neq R'$ )  $CH_3-CO-CH_2-CH_3$

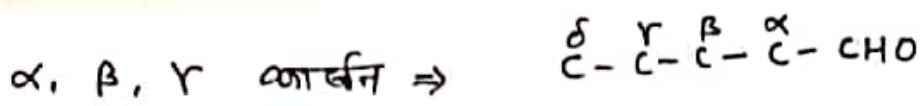
# Naming of Aldehyde & Ketone -

सामान्य नामकरण : कार्बन की संख्या से पूर्व लगान + ऐल्डिहाइड

$C_1$  form  $C_3$  propion  $C_5$  पेंटर

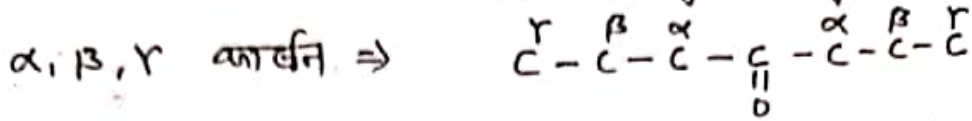
$C_2$  Acet  $C_4$  butyr

$C_3$  + द्विवंध - एक्राल  
 $C_4$  + द्विवंध - प्रोटेन

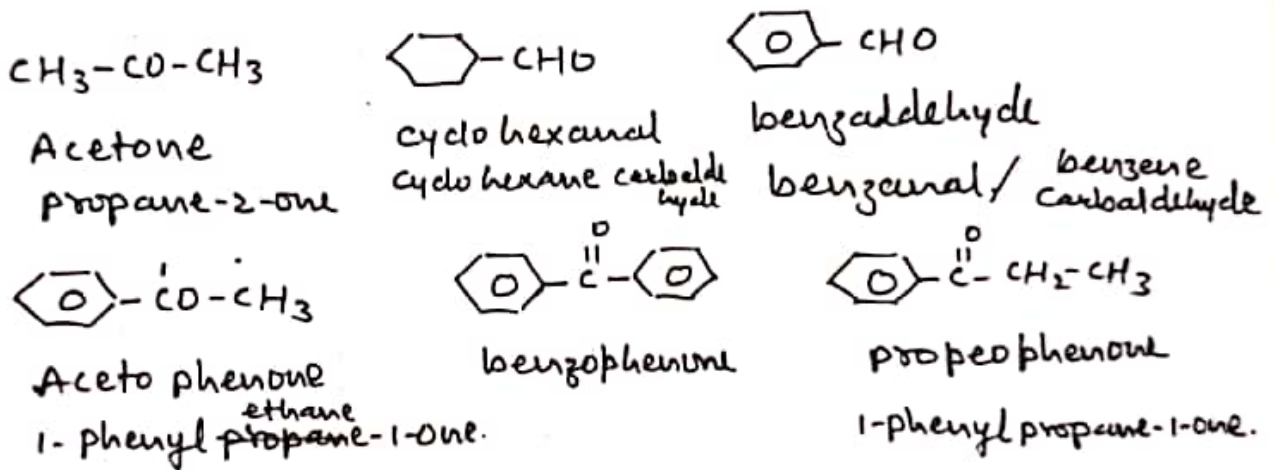
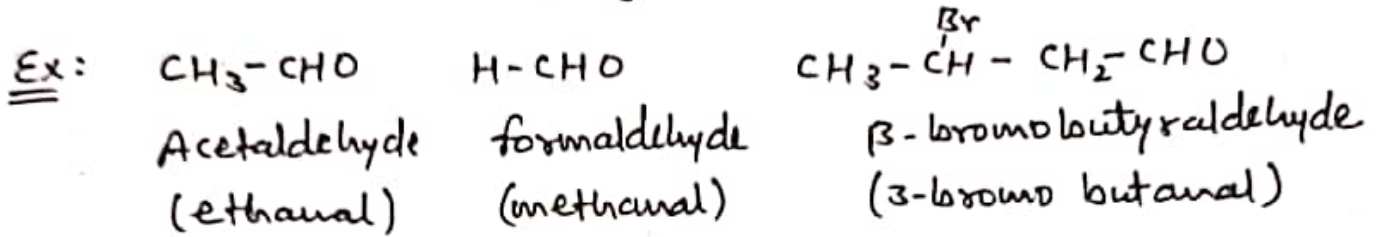


Ketone: स्वरल/सममित : dialkyl ketone

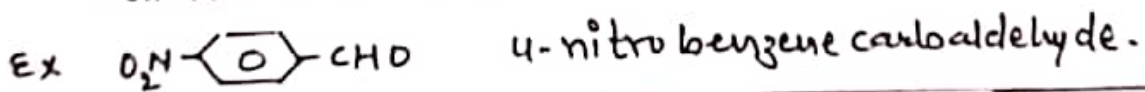
मिश्रित किरोन : alkyl alkyl ketone.



IUPAC नामकरण:  
 alkane + al  $\Rightarrow$  alkanal (Aliphatic)  
 alkane + one  $\Rightarrow$  alkanon (Aliphatic)  
 benzene + al  $\Rightarrow$  benzal



Note: यदि  $-CHO$  समूह वलय पर उपस्थित हो तो अनुवाक्य - कार्बोल्डिहाइड लगाते हैं। "carbaldehyde"



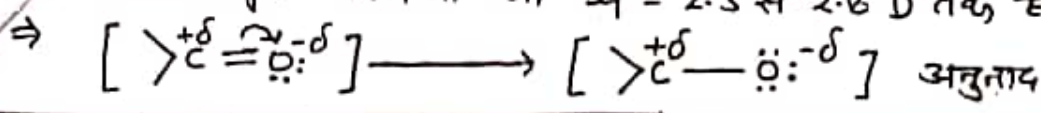
# Carbonyl की संरचना व प्रकृति :- (कक्षा 11 संरचना)



- $\Rightarrow$  कार्बन की संकरित अवस्था :  $sp^2$     बंध : तीन  $\sigma$  + एक  $\pi$
- $\Rightarrow$  ज्यामिती : समतल त्रिकोणीय , बंध कोण :  $120^\circ$
- $\Rightarrow$  Oxygen की EN  $>$  carbon की EN  $\Rightarrow$  C-O बंध ध्रुवता में बढ़ेगा
- $\Rightarrow$  carbonyl  $C^\oplus$  (धनावेशित) अतः यह  $E^\oplus$  का कार्य करता है।
- $\Rightarrow$  carbonyl  $O^\ominus$  (नकारावेशित) अतः यह  $Nu^\ominus$  का कार्य करता है।
- $\Rightarrow$  carbonyl carbon नाभिक स्नेही वेल्ड जगति, oxygen  $E^\oplus$  केन्द्र होता है।



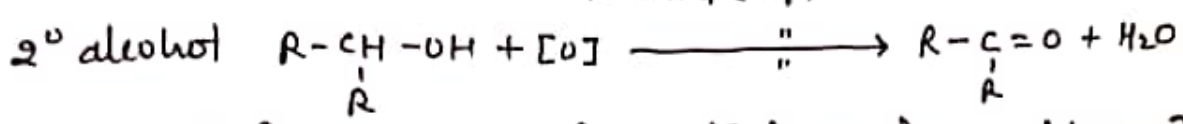
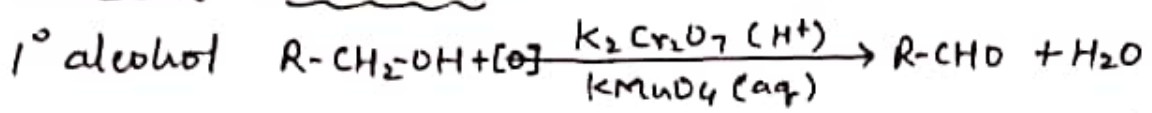
carbonyl यौगिकों का  $\mu = 2.3$  से  $2.8$  D तक होता है। ईंधर से अधिक ध्रुवीय है



# विरचन : (preparation) : Aldehyde & ketone.

(A) Common preparation - (Both Aldehyde & ketone)

1/ oxidation of alcohol -



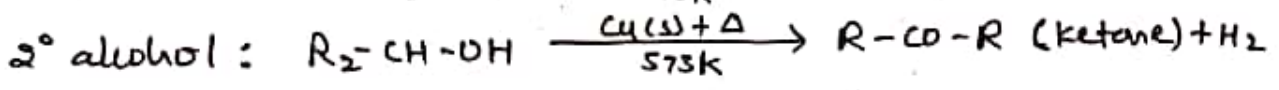
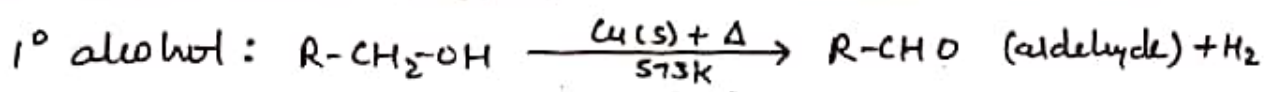
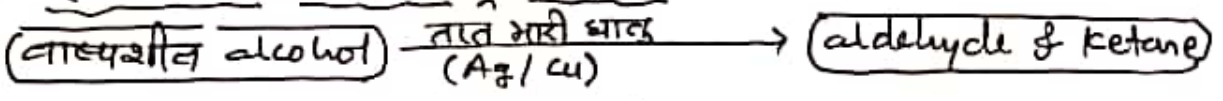
Note: इस विधि से बना R-CHO सीधे जाक़सीकृत होकर acid बना लेता है।

अतः  $1^\circ$  R-OH से R-CHO की लब्धि बढ़ाने के लिए PCC (परिचिन्मक क्लोरो क्रोमेट) उपरेण्ड (सैरैट कॉलिन अभिकर्षक) का उपयोग किया जाता है।

$C_5H_5NHCl \cdot CrO_3$

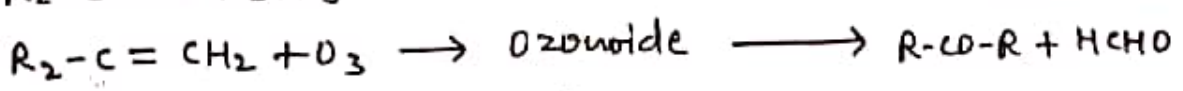
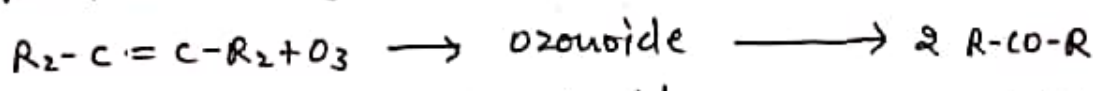
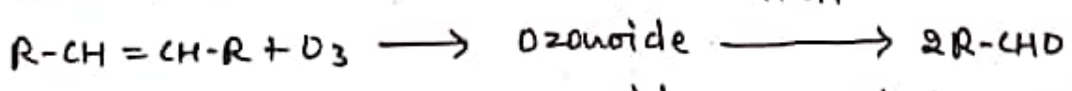
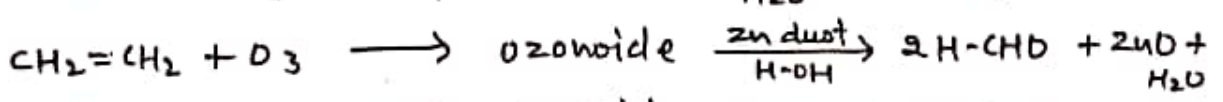
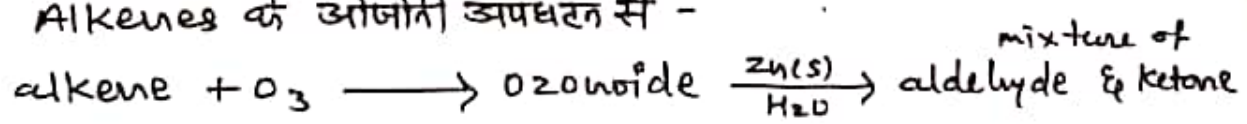
**PCC**  $\therefore$  R-OH का oxidation, R-CHO तक ही सीमित करता है।

2/ ऐल्कोहॉल के विद्युत्-अपघटन से :-

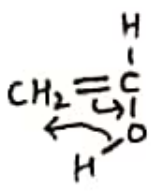
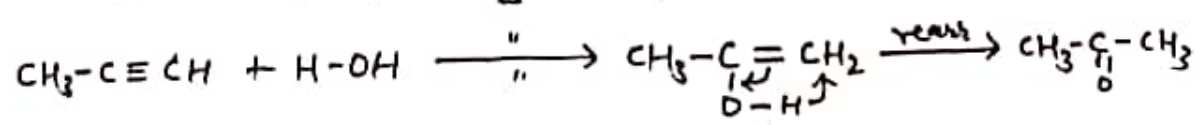
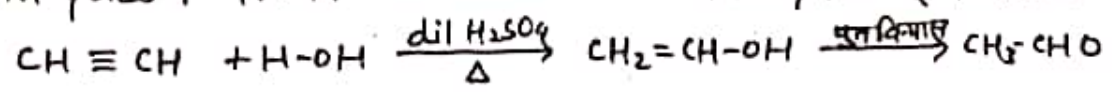


3/ हाइड्रोकार्बन से -

(a) Alkenes के ओजोनी अपघटन से -

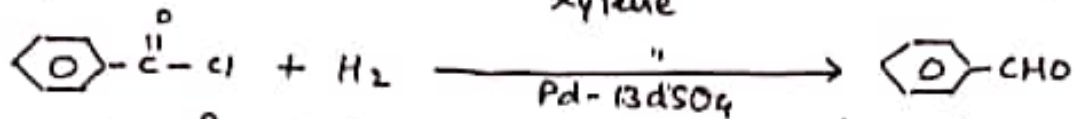
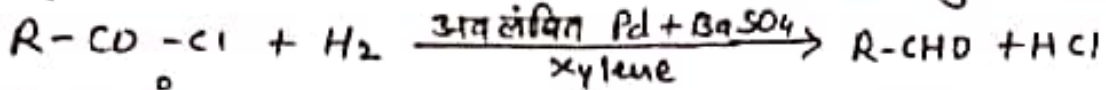


(b) Alkynes + H-OH  $\xrightarrow{H_2SO_4}$  Aldehyde & ketone.



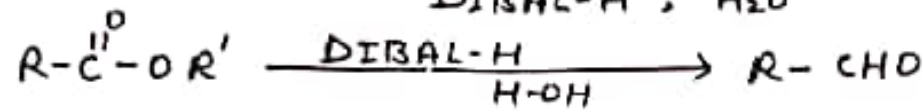
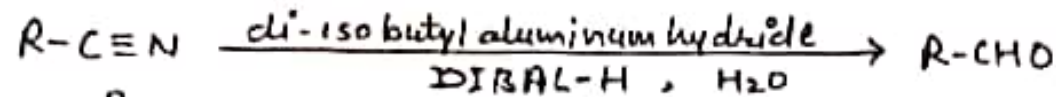
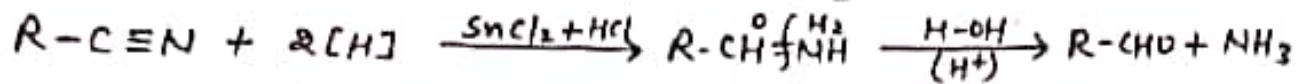
(13) Aldehyde का विरचन :

i/ Acyl chloride (अम्ल क्लोराइड) से - [श्लोलेन सुष् अपचयन] -

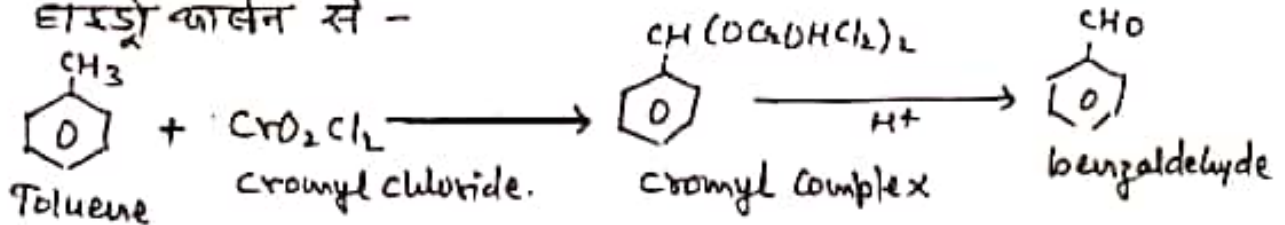


Note: इस अभि० द्वारा H-CHO (1c) नहीं बनता है क्योंकि H-CO-Cl कमरे के ताप पर अस्थायी है, वायु से छिपाकर अपघटित,  $HCOCl + CO \rightarrow CO_2 + HCl$

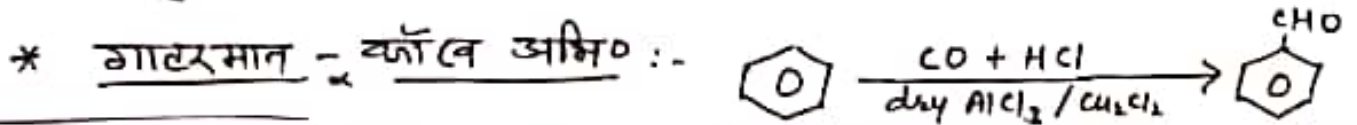
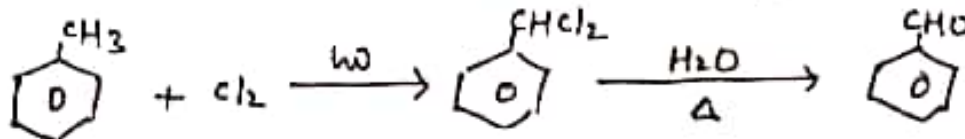
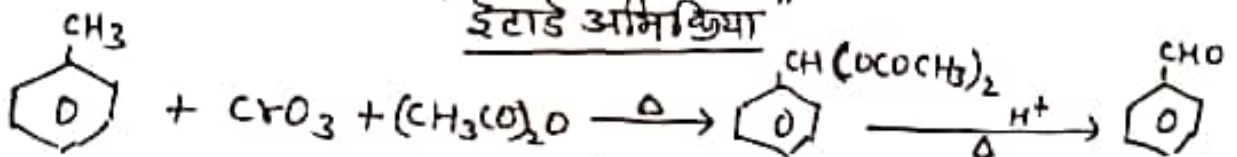
ii/ Alkyl nitrile से - [स्टीफन अपचयन] -



iii/ एटर्डो कार्बन से -

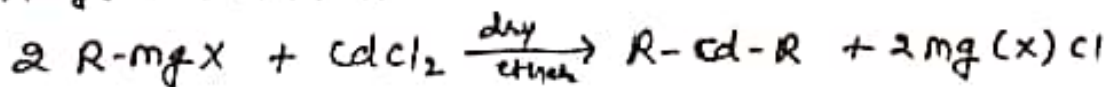


"इटर्ड अभिक्रिया"

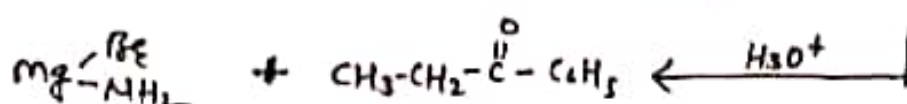
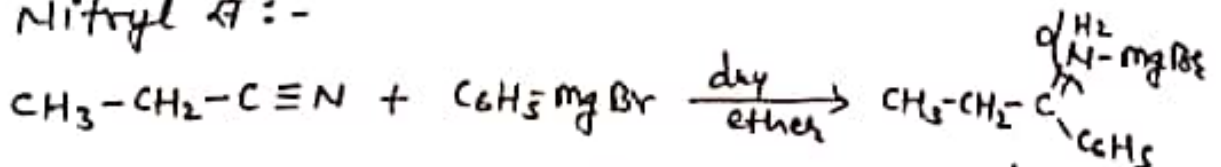


(c) Ketone का विरचन :

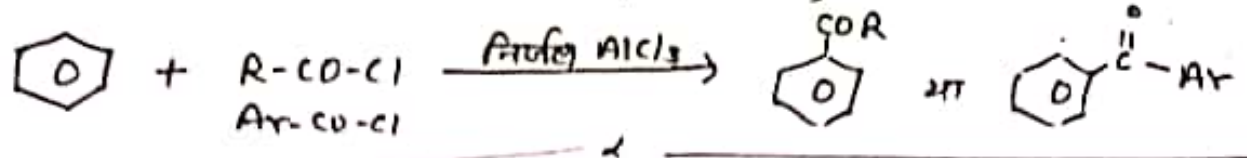
1/ Acyl chloride से :-



2/ Nitrile से :-



3/ फ्रिडल क्रॉफ्ट ऐसिलिलेशन अभि० (FCAR) :-



# भौतिक गुण -

अनुरा : H-CHO (गंध) C<sub>2</sub> - C<sub>10</sub> रंडीत, नाबगील उत, अरुणीकर गंध  
व गंध C<sub>11</sub> से उचतर - होस, फलो पोंगी गंध

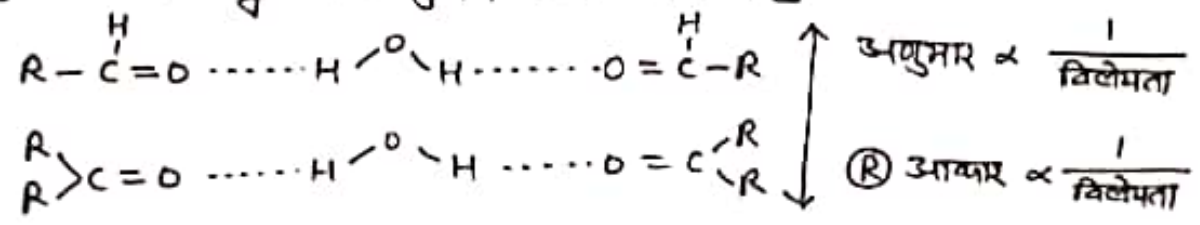
क्वथनांक : ① aldehyde, ketone के BP > alkanes  
कारण - carbonyl समूह की ध्रुवीय प्रकृति,  
द्विध्रुव - द्विध्रुव अंतराणुक आकर्षण  
EX: n-butane < butanal < butanone.

② aldehyde, ketone के BP < alcohol  
कारण - H-bonding अंतराणुक  
 $[ >C=O \cdots \cdots >C=O ]$  [  $H-O \cdots \cdots H-O$  ]  
Weak attraction Strong attraction.

EX: CH<sub>3</sub>-CO-CH<sub>3</sub> > CH<sub>3</sub>-CH<sub>2</sub>-CHO

विलेयता : C<sub>1</sub> - C<sub>5</sub> - अति विलेय, C<sub>5</sub> से उच - अविलेय

[ H-bonding  $\propto$  लगुणन  $\propto$  विलेयता ]



# शलामनिक गुणधर्म :-

- 1/ नामिक शगी / नामिक स्नेदी योणलसक अभि०
- 2/ अपचमन
- 3/ आरुणीकरण
- 4/  $\alpha$ -H की सक्रियता अभि०
- 5/ अग्न अभि०

Ⓢ नामिक शगी योणल अभि० -

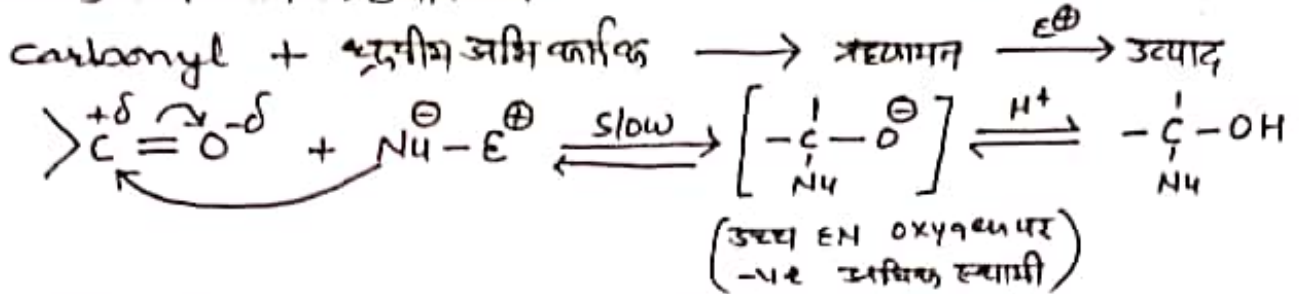
⇒ carbonyl समूह की प्रकृति ध्रुवीय होती है अतः नामिक शगी अभि० शक्य अभिलक्षण है।  
⇒ carbonyl carbon, नामिक शगी केंद्र का कार्य करता है।



⇒ इलेक्ट्रॉनिक, त्रिविम प्रभाव अनुसार नाभिकराजी योगज अभि० क Aldehyde, ketones की अपेक्षा अधिक क्रियाशील होते हैं।

कारण - ketones में 2 (R) समूह की त्रिविम बाधा जो  $NU^\ominus$  के आक्रमण में बाधा कारक है। जबकि ऐलिफैटिक में त्रिविम बाधा कारक (R) समूह अधिकतम एक ही होता है।  
(ketone में (R) carbonyl C की E $\ominus$  प्रकृति बताते हैं)

# नाभिकराजी योगज क्रिया विधि -

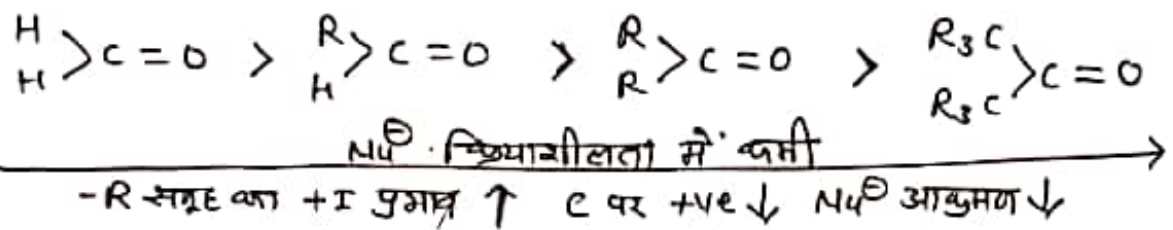


# नाभिकराजी योगज तथा नाभिकराजी योगज-विलोपन अभि० :

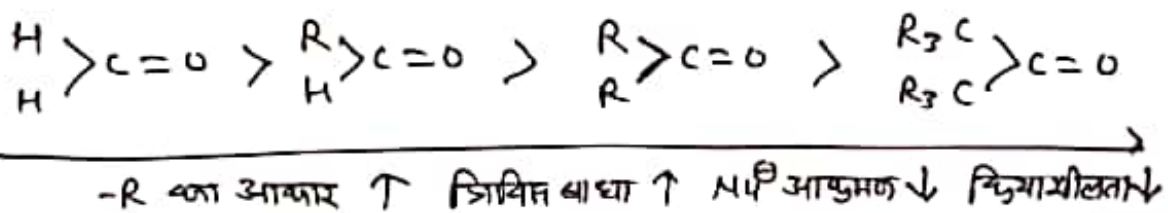
# Aldehyde, ketone की तुलना नाभिकराजी के प्रति उच्च क्रियाशील -

कारण - i/ इलेक्ट्रॉनिक प्रभाव ⇒ (+I प्रभाव)

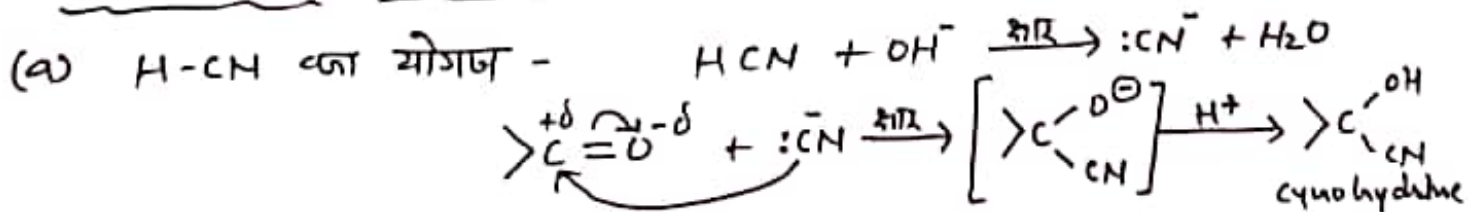
R- समूह का +I प्रभाव (EDG समूह, इलेक्ट्रॉन धरती)



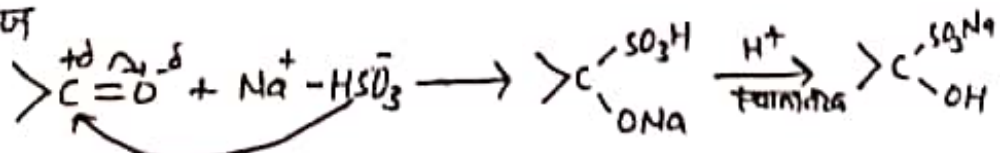
ii/ त्रिविम विस्थापी प्रभाव ⇒ (R-समूह की त्रिविम बाधा)



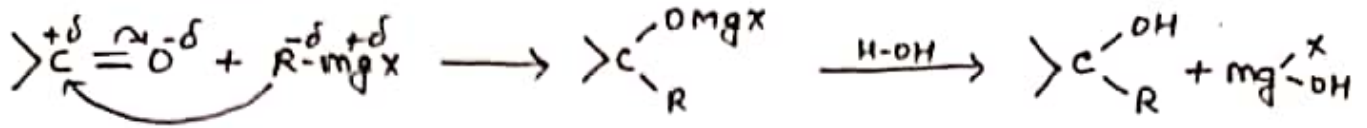
# नाभिकराजी योगज व नाभिकराजी योगज-विलोपन अभि० :-



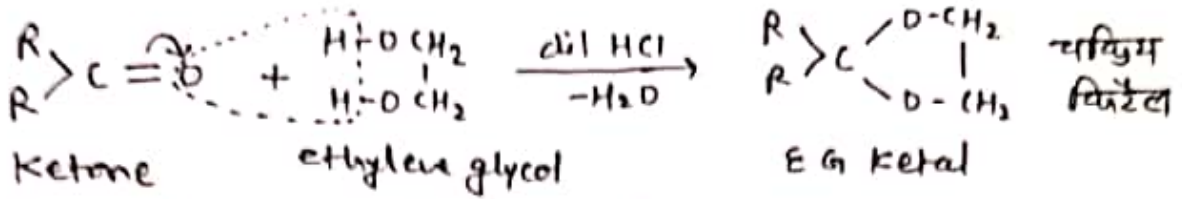
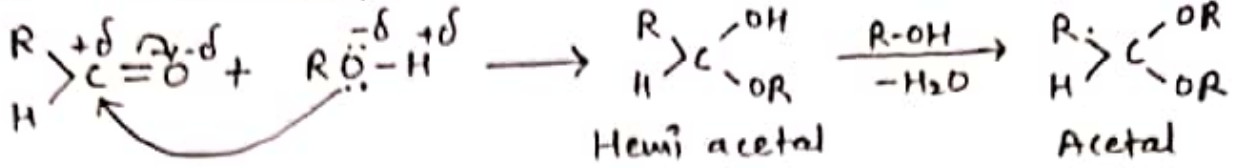
(b)  $\text{NaHSO}_3$  का योगज



GR का संयोजन :



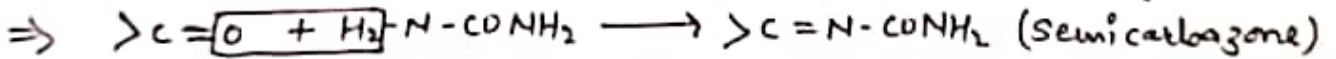
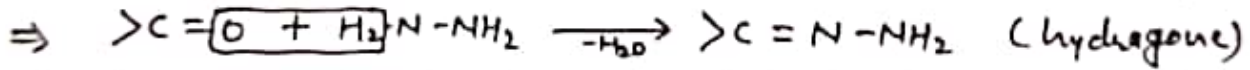
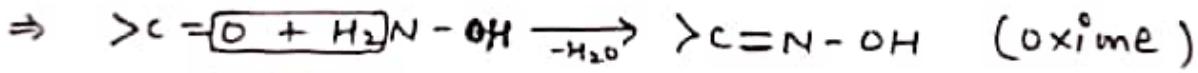
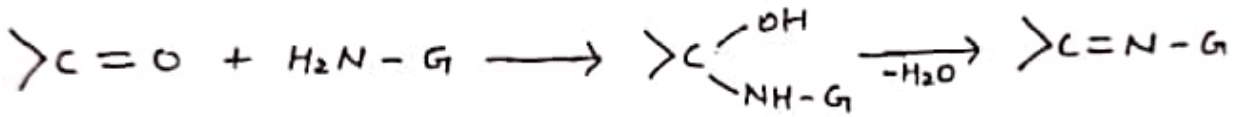
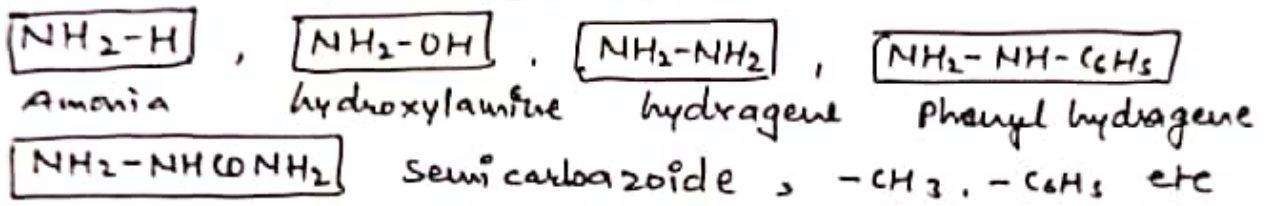
(d) Alcohol का संयोजन :



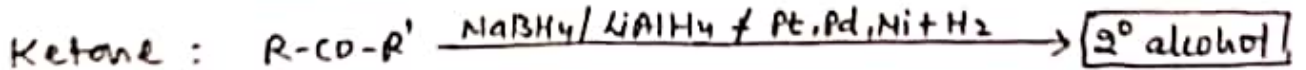
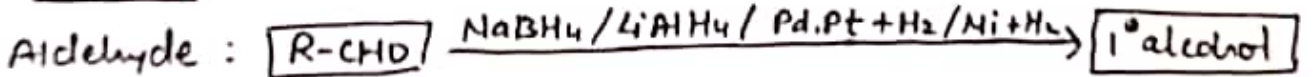
(e) नाभिक्रमणी योजन - विलोपन अभि० :

(Aldemifia & व्युत्पन्न का संयोजन) [Carbonyl + NH<sub>2</sub>-Gr]

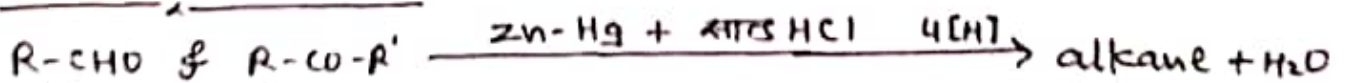
\* अमोनिया व अमोनिया व्युत्पन्न : [NH<sub>2</sub>-Gr]



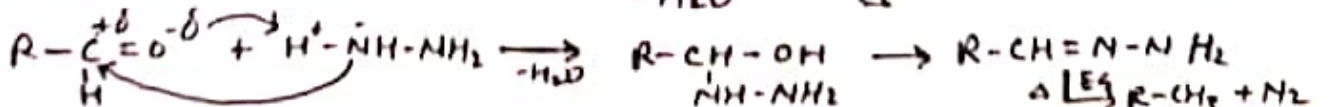
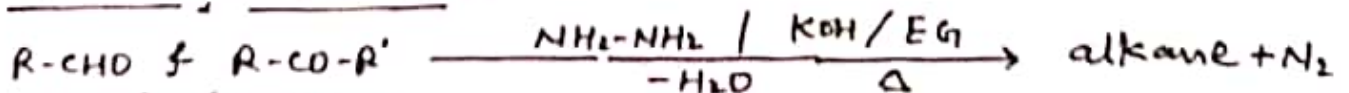
# अपचयन :



\* किलमैन्सन अपचयन : -



\* वोल्फ, किश्नर अपचयन : -

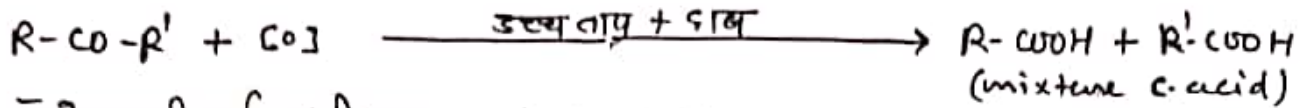
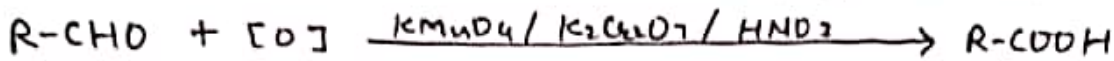




## # ऑक्सीकरण ⇒

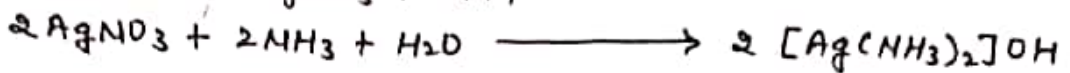
Aldehyde व Ketone का oxidation. भिन्न व्यवहार है।

Aldehyde, सामान्य ऑक्सीकारक -  $\text{HNO}_3$ ,  $\text{KMnO}_4$ ,  $\text{K}_2\text{Cr}_2\text{O}_7$  द्वारा ऑक्सीकृत  
Ketone, प्रबल परिस्थितियों में, उच्च ताप द्वारा संभव है।



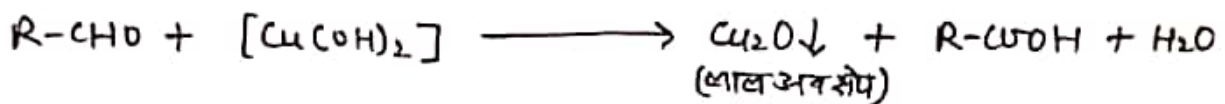
\* टॉलेन अभिकारक परीक्षण : (TR Test) -

[TR] ⇒ अमोनिया मय  $\text{AgNO}_3$  विलयन



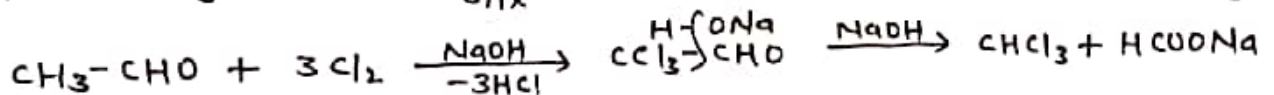
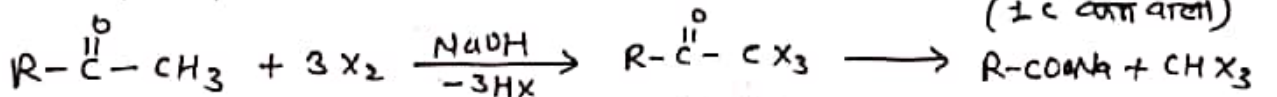
\* फ़ेलिंग परीक्षण (FR Test) -

[FR] ⇒ FR (A)  $\text{CuSO}_4(\text{aq})$  + FR (B) सोडेल लवण (सो 100 पार्ट्स)



\* Methyl समूह युक्त किरोन का हैलोफॉर्म ऑक्सीकरण -

methyl ketone + sod. hypochlorite  $\longrightarrow$  carb. acid का sod. salt  
( $\pm$  c का वजन)



Note:  $[\text{X}_2 + \text{NaOH} \longrightarrow \text{NaOX} + \text{HX}]$

द्विबंध युक्त carbonyl ग्रह Oxi नहीं देते हैं।

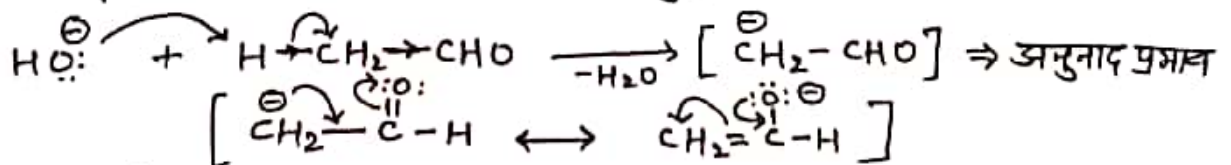
## # $\alpha$ H सक्रियता दर्शाने वाली अभि० :

⇒ Aldehyde व Ketone में  $\alpha$  H की अम्लता -

⇒ carbonyl के -I प्रभाव से इसकी प्रवृत्ति क्षुब्ध होती है।

⇒ क्षुब्धता के कारण  $\alpha$  C पर e धातुत्व घटता है एवं  $\text{C}_\alpha$ -H बंध टूटता है।

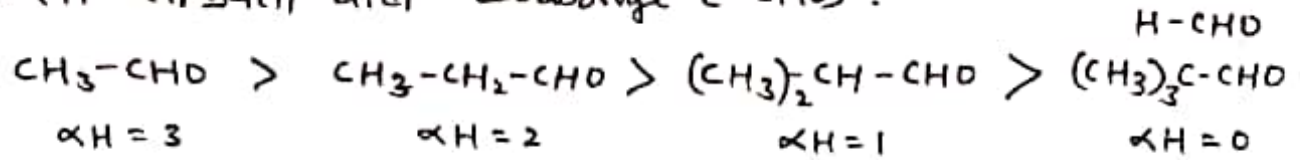
Carbonyl + प्रबल क्षार  $\longrightarrow$   $\alpha$  H मुक्त  $\Rightarrow$  इन्डोलेट ऋणामन



Note:  $\alpha$  H की अम्लता का कारण - ① carbonyl का -I प्रभाव ② अनुनाद



$\alpha$  H सक्रियता वाले carbonyl (-CHO) :



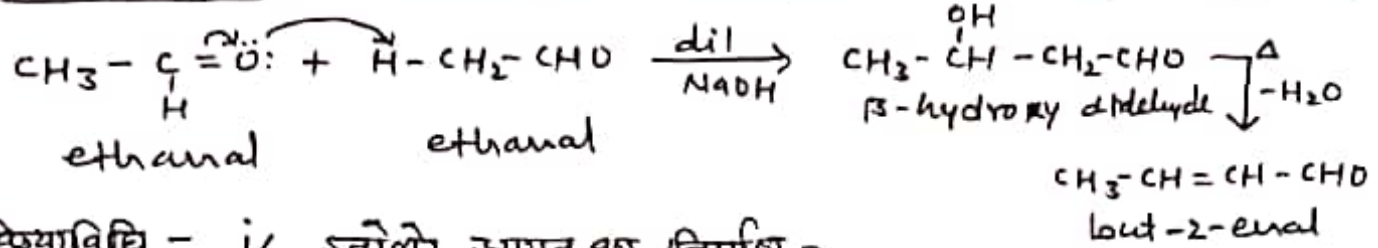
\* Aldol संघनन :

$\alpha$  H युक्त aldehyde / ketone  $\xrightarrow{\text{तनु भाप}}$  Aldol (-CHO + -OH) <sup>both group</sup>

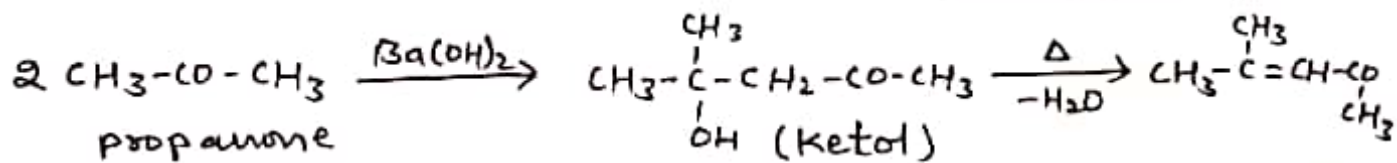
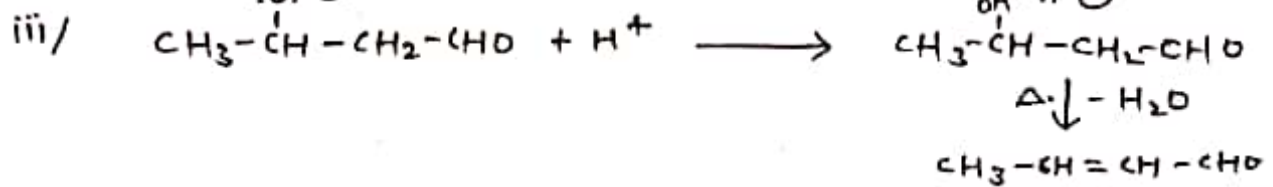
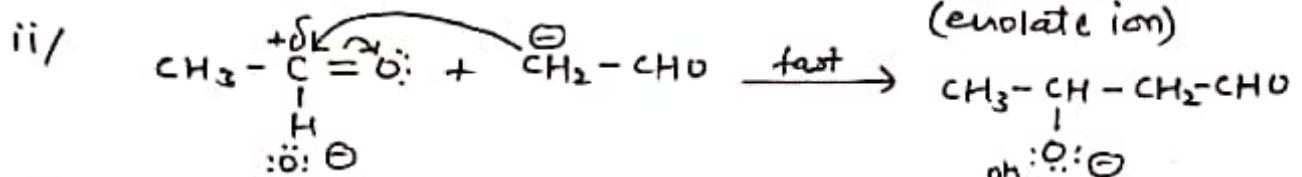
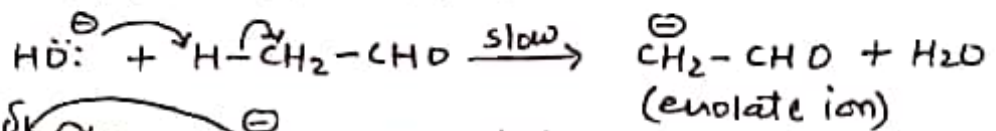
सरल Aldol  $\Rightarrow$  समान C युक्त aldehyde / ketone या दोनों अमि समान हो

क्रॉस Aldol  $\Rightarrow$  भिन्न C युक्त carbonyl या एक aldehyde + एक ketone

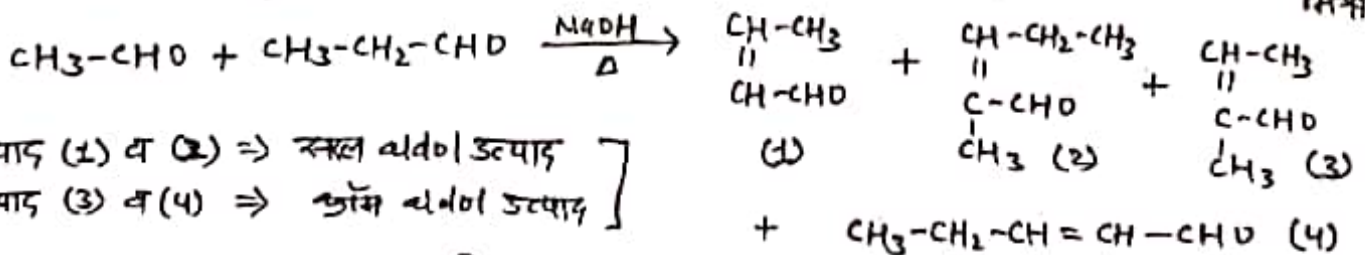
\* सरल Aldol :- Aldehyde + Aldehyde  $\xrightarrow{\text{सघनन}}$  Aldol.  $\xrightarrow{-\text{H}_2\text{O}}$  उत्पाद



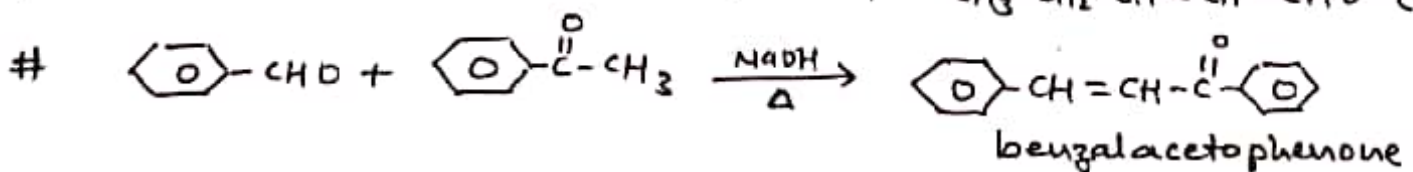
प्रियाविधि - i/ शनोलेट आमत का निर्माण -



\* क्रॉस Aldol :-  $\alpha$  H युक्त Aldehyde +  $\alpha$  H युक्त Ketone  $\xrightarrow{\text{सघनन}}$  उत्पाद



[ उत्पाद (1) व (2)  $\Rightarrow$  सरल aldol उत्पाद  
उत्पाद (3) व (4)  $\Rightarrow$  क्रॉस aldol उत्पाद ]



# अन्य अभि० : (a) कॅनिजारी अभिक्रिया - (b) इले० स्नेदी प्रतिस्थापन

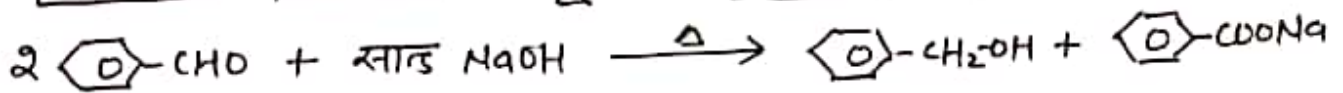
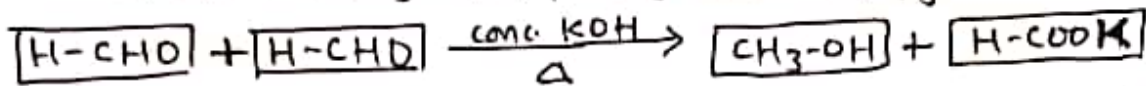
(a) कॅनिजारी अभि० :

$\alpha$  H रहित/अनुपस्थिति aldehyde  $\xrightarrow[\text{क्षय } \Delta]{\text{सांद्र NaOH}}$  स्वऑक्सीकरण व अपघन. (असमानुपातन)

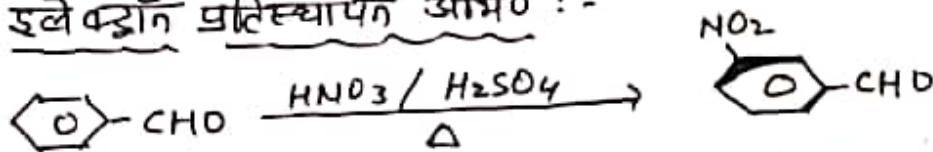
Aldehyde का एक अणु ऑक्सीकृत होकर  $\Rightarrow$  acid.

Aldehyde का दूसरा अणु क्षयचित होकर  $\Rightarrow$  alcohol

Ex:  $\text{H-CHO}$ ,  $\text{C}_6\text{H}_5\text{-CHO}$ ,  $\text{CCl}_3\text{-CHO}$ ,  $(\text{CH}_3)_3\text{C-CHO}$



(b) इलेक्ट्रॉन प्रतिस्थापन अभि० :-



# Aldehyde & Ketone : uses,

- i/  $\boxed{\text{H-CHO}}$  (formaldehyde) का 40% जलीय विलयन  $\Rightarrow$  फॉर्मलिन  
फॉर्मलिन मृत जीवों के प्रतिद्वारों के परिरक्षण, बैक्टीरिया विरधन में उपयोगी  
Phenol formaldehyde resin, Urea formaldehyde लरेस में उपयोगी
- ii/  $\boxed{\text{CH}_3\text{-CHO}} \Rightarrow \text{CH}_3\text{COOH}$ , एस्टर, वाइनिल ऐसिडेट बहुलक उत्पादन में
- iii/  $\text{C}_6\text{H}_5\text{-CHO}$  का उपयोग सुगंध तथा रंजक उद्योग में
- iv/  $\text{CH}_3\text{COCH}_3$ , विलायक, नील पॉलिस रिमूवर etc

# CARBOXYLIC ACID,

$\Rightarrow$  Carbonyl समूह पर एक hydroxyl (-OH) समूह की उपस्थिति

$\Rightarrow$  सामान्य सूत्र :  $\text{C}_n\text{H}_{2n+1}\text{COOH}$  या  $\text{C}_n\text{H}_{2n}\text{O}_2$

$\Rightarrow$  Aliphatic acid :  $\text{R-COOH}$   $\text{R}-\overset{\text{O}}{\parallel}{\text{C}}-\overset{\text{O}}{\text{H}}$

$\Rightarrow$  Aromatic acid :  $\text{Ar-COOH}$   $\text{C}_6\text{H}_5\text{-COOH}$

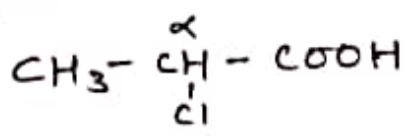
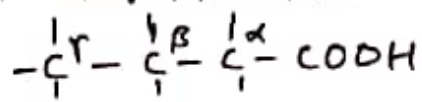
$\Rightarrow$  उच्चतर कार्बोक्सिलिक अम्लों को वसा अम्ल भी कहते हैं.

$\Rightarrow$  Carboxylic Acid के व्युत्पन्न : एनहाइड्राइड, एस्टर, एमाइड  
Acyl halide

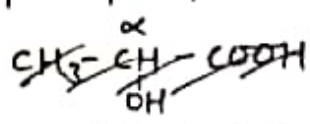
# Naming of Carboxylic Acid :-

- \* खामान्य नामकरण - प्राकृतिक स्रोत अनुसार -
  - H-COOH formic acid = लालघिरियाँ (formica) से
  - CH<sub>3</sub>-COOH Acetic acid = सिरका (Acetum) से
  - CH<sub>3</sub>(CH<sub>2</sub>)<sub>2</sub>-COOH Butyric acid ⇒ विकृत गंधी मक्खन (buterim)
  - CH<sub>3</sub>CH<sub>2</sub>-COOH proton + pion ⇒ प्रथम + वसा ⇒ Propionic acid
  - C<sub>6</sub>H<sub>5</sub>COOH वेलेरियन पादप से ⇒ Valeric acid

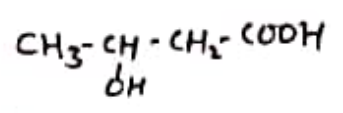
प्रतिस्थापी की स्थिति :



α-chloro acetic acid

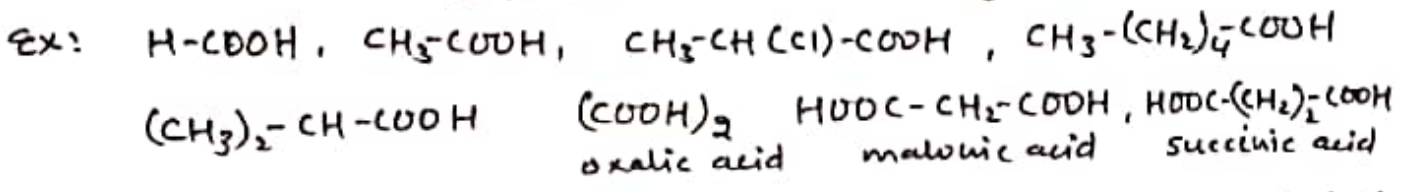


α-hydroxy propionic

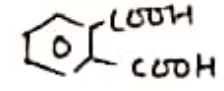


## \* IUPAC नामकरण -

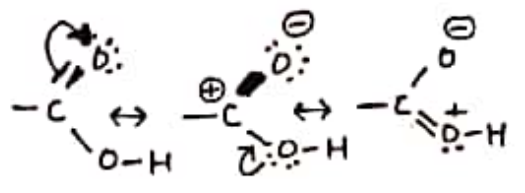
- Aliphatic Acid ⇒ alkane + oic acid
- Aromatic Acid ⇒ benzene + oic acid



Dioic acid ⇒ O-A, -CH<sub>2</sub>- (MA), -(CH<sub>2</sub>)<sub>2</sub> (SCA), -(CH<sub>2</sub>)<sub>3</sub> (GA), -(CH<sub>2</sub>)<sub>4</sub> (AA)

Aromatic:  Aromatic acid

## # Structure of Carboxylic :-

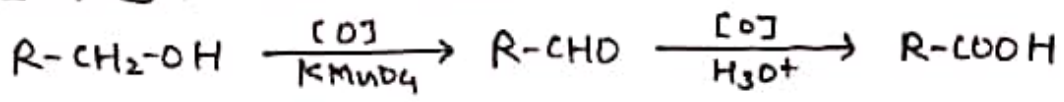


⇒ संकरण = sp<sup>2</sup>, बंध कोण = 120°, अनुनाद

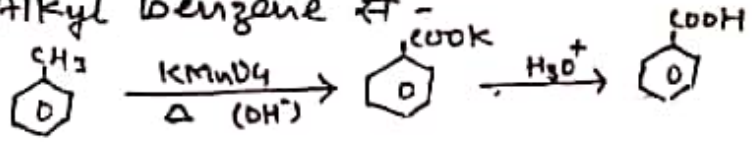
⇒ -COOH का कार्बन, कार्बोनिल कार्बन की अपेक्षा न्यून इलेक्ट्रॉनिक होता है क्योंकि अनुनाद द्वारा +ve charge विस्थापित हो जाता है।

## # विरचन (Preparations) -

1/ प्राथमिक ऐल्कोहॉल व ऐलिफाटिक से -

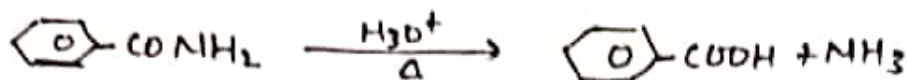
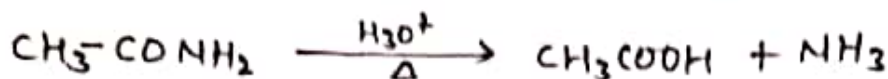
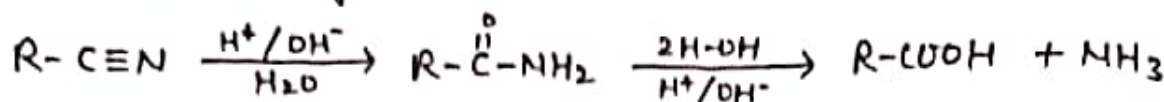


2/ Alkyl benzene से -

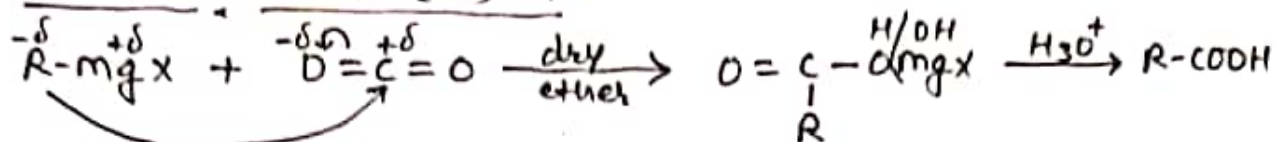




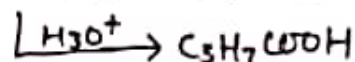
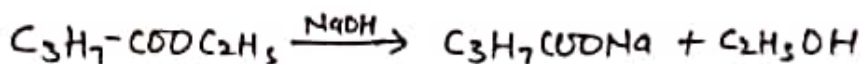
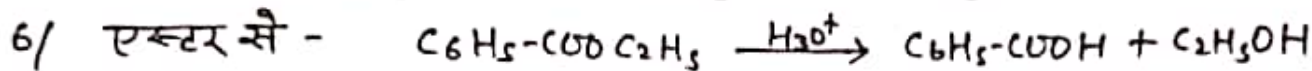
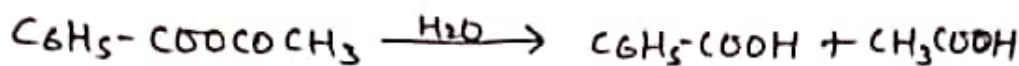
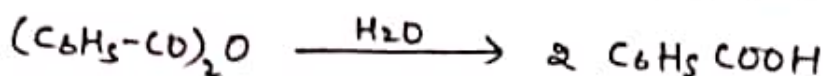
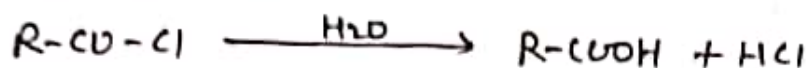
3/ alkane nitril & amide से -



4/ डिग्रार अभिष्णाफि (OR) से :



5/ ऐसिल क्लाइड से -



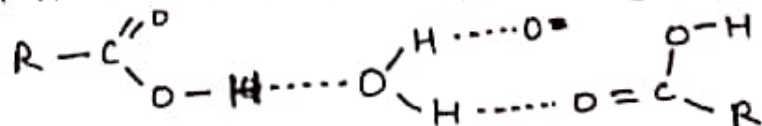
# Physical properties :

[C<sub>1</sub>-C<sub>10</sub> तक Acid ⇒ रंगी ड्र परन्तु उच्चतर Acid, मोम जैसे होत  
C<sub>1</sub>-C<sub>3</sub> तक Acid ⇒ वीज जघं, C<sub>4</sub>-C<sub>9</sub> मक्खन, C<sub>10</sub> से उच्च-जघंहीन

विलेयता : निम्नतर acid विलेय परन्तु उच्चतर acid अविलेय

\* अणुमार ↑ R-लघुए ↑ -COOH ध्रुवणता ↓

\* जल में विलेयता का कारण अंतराणुक H-bonding

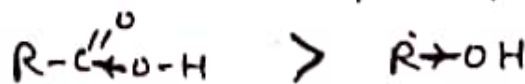


(Acid व H<sub>2</sub>O में H-bonding)

व्यवचनार्थ : R-COOH > R-OH > alkane ≈ ether

\* acid में अंतराणुक H-bonding द्वारा ड्रिलक बनता है जो वाष्प व अणुशुष्क विलायकों में धोलने पर बनता है।

\* R-COOH में O-H ध्रुवणता, R-OH से उच्च होती है।

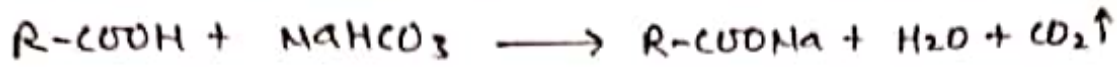


(-CO का -I प्रभाव)

(-R का +I प्रभाव)

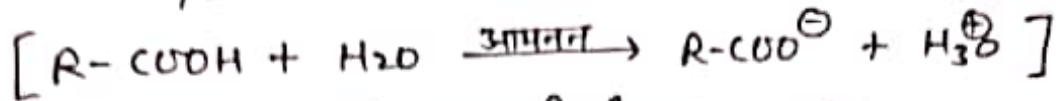
शसाथनिकु-गुणधर्म :-

(A) O-H बंध विदलन अभिक्रियाएँ :- [अम्लता, Acidity]



Note: किसी अम्ल द्वारा जल में  $H^+$  देने की क्षमता - अम्लता होती है।

Carboxylic acid +  $H_2O$   $\xrightarrow{\text{विघोजन}}$  Carboxylate Anion



Carboxylate Anion की अनुनादी संरचना -  $\left[ R-C \begin{matrix} \text{O} \\ \parallel \\ \text{O}^- \end{matrix} \leftrightarrow R-C \begin{matrix} \text{O}^- \\ \parallel \\ \text{O} \end{matrix} \right]$

आयनन अभि० से -

$$K = \frac{[H_3O^+][R-COO^-]}{[R-COOH][H_2O]}$$

$$K[H_2O] = \frac{[H_3O^+][R-COO^-]}{[R-COOH]} \quad \because K[H_2O] = K_{eq} = K_a$$

$K_a$  का मान ताप पर निर्भर करता है।  $K_a \propto [H_3O^+]$

अतः  $[H^+] \uparrow$   $K_a \uparrow$  अम्लता  $\uparrow$  प्रबल अम्लता

$K_a$  का  $-\log K_a = pK_a$ ,  $[-\log K_a = pK_a]$

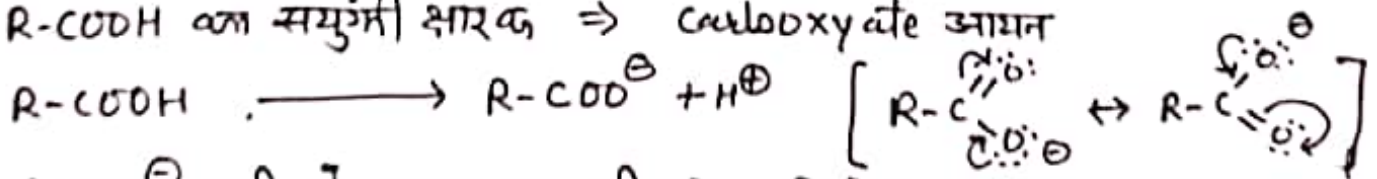
अतः  $pK_a$  का मान  $\propto \frac{1}{\text{अम्लता}}$

Ex: ①  $H-COOH > CH_3COOH > C_2H_5COOH$

$K_a \downarrow$  अम्लता  $\downarrow$

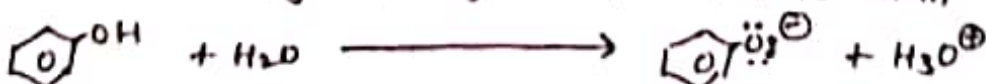
Ex. ② Carboxylic acid., यमनिज अम्लों से दुर्बल अम्लीय परन्तु R-OH Phenol से प्रबल अम्लीय होते हैं।  $R-OH < Ar-OH < R-COOH$

\* R-COOH का संयुग्मी क्षारक  $\Rightarrow$  Carboxylate आयन



$R-COO^-$  की दो समान अनुनादी संरचनाओं में ऋणानेक अधिक, EN oxygen पर विस्थापित है। अतः स्थायी अधिक होना!

\*  $C_6H_5-OH$  का संयुग्मी क्षारक  $\Rightarrow$  Phenoxide आयन





Phenoxide अनुनाद द्वारा असमान रचनाएँ बनाता है। इनमें कम निम्न EN कार्बन पर विस्थानीकृत होता है अतः निम्न स्थायीत्व।

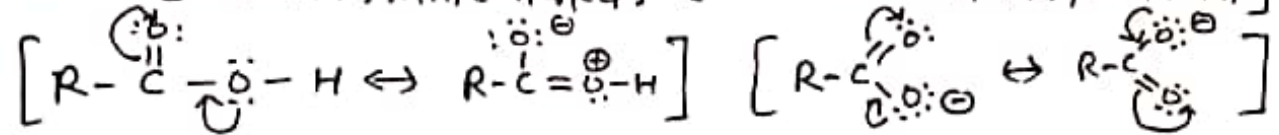
अतः carboxylate ion से phenoxide कम स्थायी है।

Phenol की अपेक्षा carboxylic acid अधिक ठाण्डीप है।

③ carboxylic acid से carboxylate गठनात्मक अधिक स्थायी है।

(R-COOH में अनुनाद) (R-COO<sup>-</sup> में अनुनाद)

[ निम्न ऊर्जा, असमान संरचनाएँ ] [ उच्च ऊर्जा, समान संरचनाएँ ]  
 [ आवेश वृद्धिकरण, निम्न स्थायीत्व ] [ -ve विस्थानीकरण, उच्च स्थायी ]



④ R-COOH, R-OH की अपेक्षा अधिक ठाण्डीप है।

**[R-COOH]** ⇒ (R) का +I प्रभाव निम्न परन्तु >CO का -I प्रभाव उच्च होने से O पर e घनत्व में कमी अतः O-H ध्रुवणता बढ़ने से H<sup>+</sup> निष्कासन व अम्लता बढ़ेगी!

**[R-OH]** ⇒ (R) का +I प्रभाव उच्च अतः O पर e घनत्व बढ़ेगा इस प्रकार O-H ध्रुवणता में कमी H<sup>+</sup> का निष्कासन घटेगा

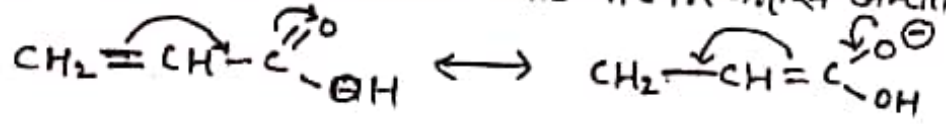
# R-COOH की अम्लता पर प्रतिस्थापी प्रभाव -

(EWG) ← C=O इले० अपनयक / आकर्षि / -I प्रभाव वाले समूह  
 Oxygens पर e घनत्व घटेगा, O-H ध्रुवणता बढ़ेगी  
 H<sup>+</sup> का निष्कासन व अम्लता में वृद्धि होगी!

(EDG) → C=O इले० दाता / विमोचक / +I प्रभाव वाले समूह  
 Oxygens पर e घनत्व बढ़ेगा, O-H ध्रुवणता घटेगी  
 H<sup>+</sup> का निष्कासन व अम्लता में कमी होगी!

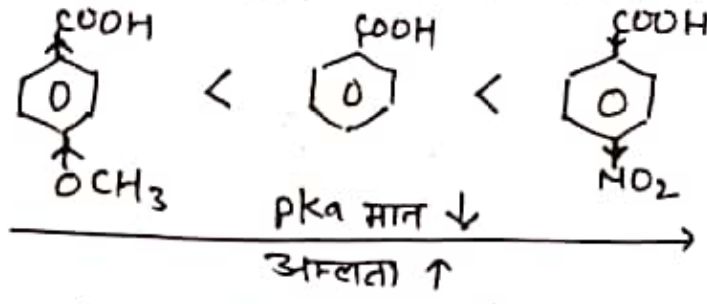
- Ex:  $CF_3COOH > CCl_3COOH > CHCl_2COOH > NO_2CH_2COOH$   
 $FCH_2COOH > ClCH_2COOH > BrCH_2COOH > HCOOH$   
 $ClCH_2CH_2COOH > C_6H_5COOH > C_6H_5CH_2COOH > CH_3COOH$

# Carbonyl समूह पर वाइनील समूह / फॉनिल समूह की उपस्थिति से अम्लता में वृद्धि होती है।

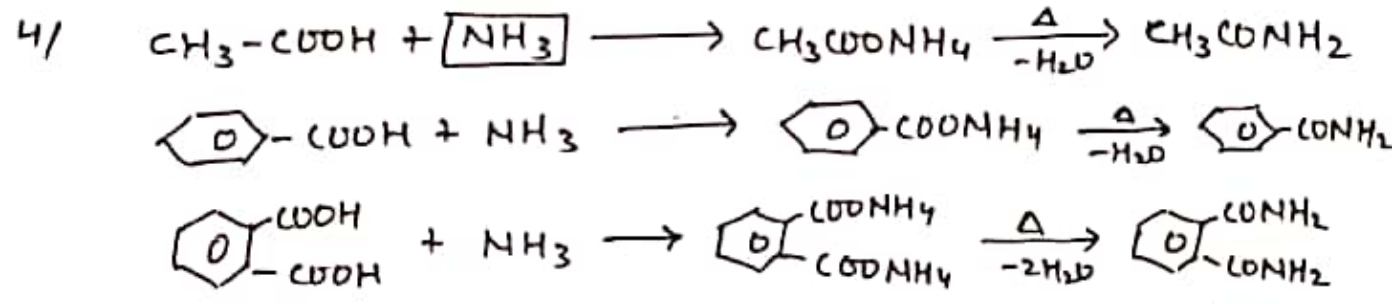
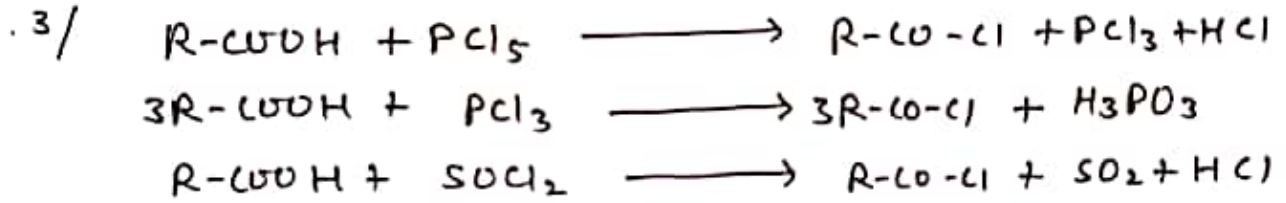
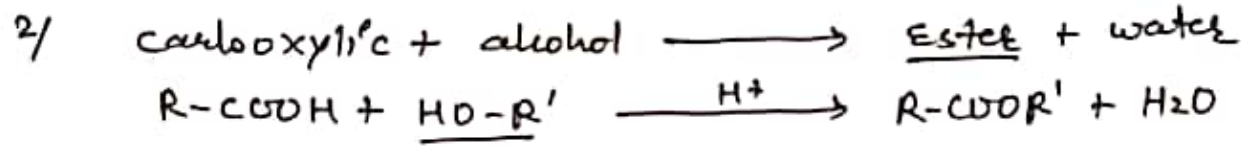
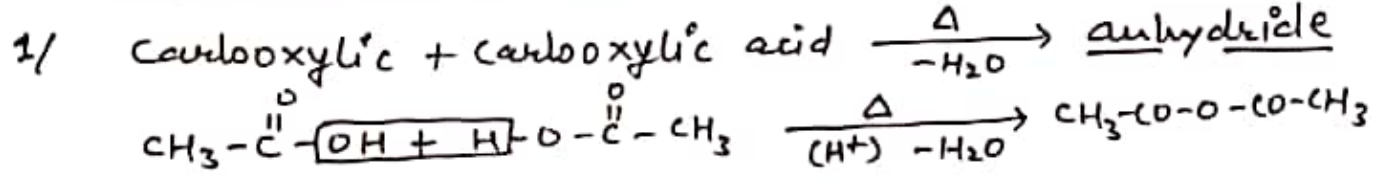




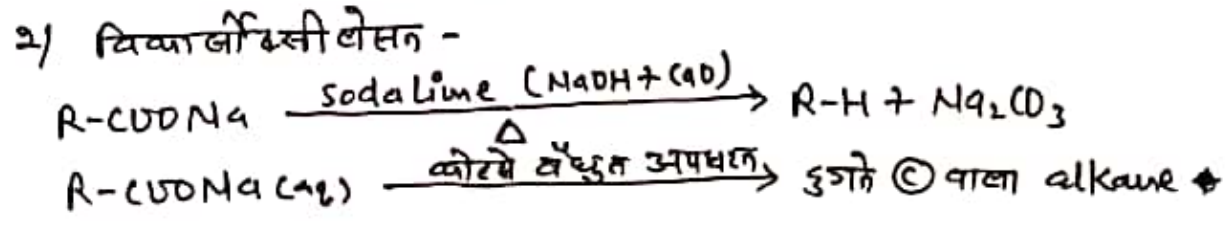
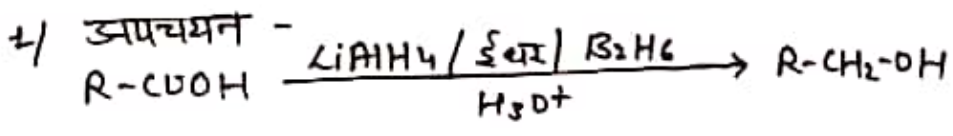
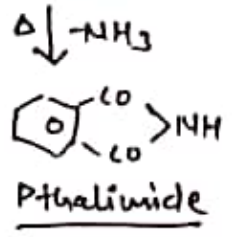
Ar-COOH में वलय पर यदि e<sup>-</sup> आकर्षि/अपनयक, समूह उपस्थित हो तो acid की अम्लता बढ़ती है परन्तु e<sup>-</sup> प्रतिधर्षी या e वाता समूह अम्लता घटाते हैं।



(B) C-OH विदलन अभि० :-



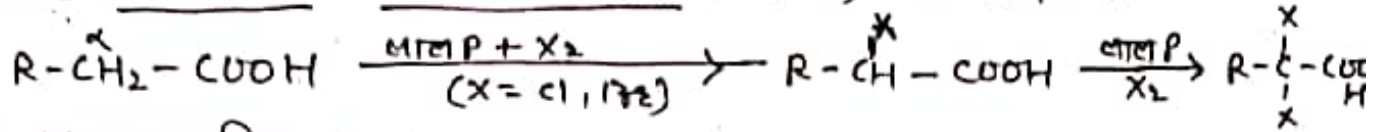
(C) -COOH समूह की अभि० :



(D) -R सभूह / hydrocarbon सभूह अभि० -

1) हॅलोजनीकरण - ( $\alpha$  H युक्त ~~aldehyde & ketone~~ <sup>carboxylic acid</sup>) (H-COOH नही देते)

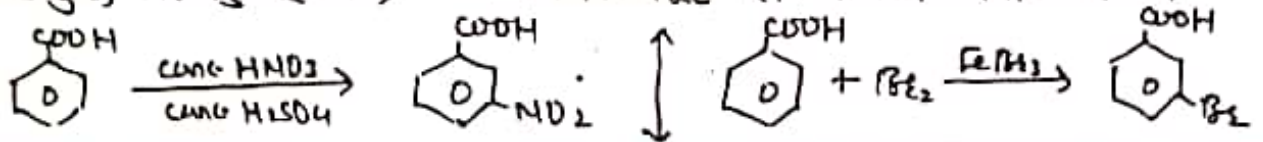
$\alpha$  H युक्त R-COOH  $\xrightarrow{\text{लाल P} + \text{Cl}_2 / \text{Br}_2}$   $\alpha$ -halocarboxylic acid  
यह हॅलनोलाई जेलिंस्की अभि० (HVZ) कहलाती है।



2) बलम प्रतिस्थापन :-

$\Rightarrow$  Ar-COOH . बलेशशी प्रतिस्थापन देते हैं। इनमें -COOH सभूह m-निर्देशी का कार्य करता है।

$\Rightarrow$  Ar-COOH फ्रिडल क्राफ्ट अभि० नहीं देते हैं क्योंकि FCR में प्रयुक्त  $\text{AlCl}_3$  (LA) -COOH सभूह से आबंध बना लेता है।



3) USES OF Carboxylic acid  $\Rightarrow$

H-COOH  $\Rightarrow$  रबर, वस्त्र, रंगों, electroplating में उपयोगी।

$\text{CH}_3\text{COOH} \Rightarrow$  विलायक, सिरका, etc

$\text{COOH}-(\text{CH}_2)_4\text{COOH} \Rightarrow$  Nylon-6,6 निर्माण में useful

$\text{C}_6\text{H}_5\text{COOH} \Rightarrow$  एस्टर सुगंध, इत्य

$\text{C}_2\text{H}_5\text{COONa} \Rightarrow$  ज्वार परिरक्षण में प्रयुक्त (सर्वाधिक परिरक्षक)

\* क्या कारण है कि R-COOH में  $>\text{C}=\text{O}$  सभूह होते हुए भी उनके लक्षण नहीं

$\Rightarrow$  Acid में अनुनाद द्वारा कार्बन व ऑक्सीजन के <sup>मध्य</sup> आबंध टूटने से  $\text{C}=\text{O}$  बन्ध में कमी आने से कार्बन, नामिकराणी केन्द्र का व्यवहार नहीं करता है।